

# समुच्चय अर्थ



प्रभुजी अष्ट द्रव्य जु ल्यायो भावसों,  
प्रभु थांका हरप हरप गुण गाऊं महाराज।  
यो मन हरख्यो प्रभु थांकी पूजा जी रे कारण॥  
प्रभुजी थांकी पूजा भवि जन नित करै।  
ताका अशुभ कर्म कटजाय महाराज॥

यो मन.....



प्रभुजी थांकी पूजा भवि जन नित करै।  
ताका अशुभ कर्म कटजाय महाराज॥  
यो मन हरख्यो प्रभु थांकी पूजा जी रे कारण॥

यो मन.....



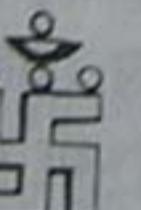
प्रभुजी इन्द्र धरणेन्द्र जी सब मिलि गाय।  
प्रभुजी थे छो जी अनन्ताजी गुणवान।  
थाने तो सुमर्यां संकट परिहरे महाराज॥

यो मन.....



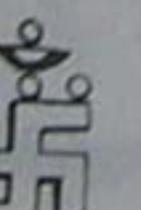
प्रभुजी थे छो जी साहिब तीनों लोक का।  
जिनराज मैं छूंजी निपट अज्ञानी महाराज॥

यो मन.....



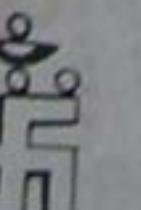
प्रभुजी थांका तो रूप को निरखन कारण।  
सुरपति रचिया छें नयन हजार महाराज॥

यो मन.....



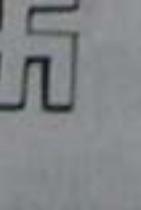
प्रभुजी नरक निगोद मैं भव भव मैं रुल्यो।  
जिनराज सहिबा छै दुःख अपार महाराज॥

यो मन.....



प्रभुजी अब तो शरणो जी थारो मैं लियो।  
किस विध कर पार लगावो महाराज॥

यो मन.....



प्रभुजी म्हारो तो मनडों थामें घुल रहयो।  
ज्यों चकरीविच रेशम डोरी महाराज॥

यो मन.....

प्रभुजी तीन लोक में हैं जिन बिम्ब।  
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजास्या महाराज॥

यो मन.....

प्रभुजी जल चंदन अक्षत पुष्प नैवेद्य।  
दीप धूप फल अर्घ चढ़ाऊं महाराज॥  
जिन चैत्यालय महाराज सब चैत्यालय जिनराज॥

यो मन.....

प्रभुजी अष्ट द्रव्य जू ल्यायो बनाय।  
पूजा रचाऊं श्री भगवान की॥

यो मन.....

ॐ ह्रीं भाव पूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करै करावै, भावना भवै,  
श्री अरहन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी, पंचपरमेष्टीभ्यो  
नमः, प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः,  
दर्शनविशुद्धयादिषोडषकारणेभ्यो नमः उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः,  
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्रेभ्यो नमः, जल के विषे, थल के विषे, आकाश  
के विषे, गुफा के विषे, पहाड़ के विषे, नगर नगरी के विषे, ऊर्ध्व लोक, मध्य लोक,  
पाताल लोक विषे, विराजमान कृत्रिम-अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्या नमः,  
विदेह क्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थकरेभ्यो नमः, पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र  
सम्बन्धी तीस चौबीसी के सातसे बीस जिनालयेभ्यो नमः, नन्दीश्वर द्वीप सम्बन्धी  
बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः, पंचमेरु सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः,  
सम्प्रदेशिखर, कैलाश, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः, जैन  
बद्री, मूडबद्री राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, चमत्कार, महावीर स्वामी, पद्मप्रभु स्वामी  
आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंत भगवन्त कृपालसन्तं श्री वृषभदि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति  
तीर्थकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे.....  
नाम्नि नगरे मासानोमुत्तमे मासे ..... मासे शुभे ..... पक्ष शुभे ..... तिथौ  
..... वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां क्षुल्लक-  
क्षुल्लकानां सकलकर्मक्षयार्थ ( जलधारा ) अनर्थ पद प्राप्तये महार्थ  
सम्पूर्णार्थ्य निर्वपामीति स्वाहा।

भावपूजा वन्दनास्तवसमेतं श्री पंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।

